आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 7 मार्च, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

जलवायु परिवर्तन का कृषि व पशुपालन पर प्रभाव: एक ज्वलंत समस्या

विश्वभर में जलवायु परिवर्तन का विषय सर्वविदित है। जलवायु परिवर्तन वैश्विक समाज के समक्ष एक बहुत बड़ी समस्या है जिससे निपटना वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती है। बढ़ता हुआ वैश्विक तापमान एक गम्भीर समस्या है जिसका प्रमुख कारण जलवायु परिवर्तन है। जलवायु में दिखने वाले परिर्वतन लम्बे समय का परिणाम है जिसके कारण न केवल क्षेत्रीय व वैश्विक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं बल्कि सम्पूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन से प्रभावित हो रहा है। जलवायु परिवर्तन का कारण प्राकृतिक व मानवीय दोनों है, जिसमें मानवीय कारणों का योगदान अधिक है। मानवीय कारणों में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन यथा कार्बन डाईआक्साईड, मीथेन नाइट्रस ऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साईड आदि के उत्सर्जन में वृद्वि पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्वि का एक प्रमुख कारण है। बनोन्मूलन, पशुपालन व कृषि में वृद्वि, नाइट्रोजन उर्वरकों का कृषि में अधिक उपयोग आदि क्रियाएं भी जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है। प्राकृतिक कारणों में सौर विकिरण में बदलाव एवं ज्वालामुखी विस्फोट आदि है। जलवायु परिवर्तन भारत ही नहीं अपितु विश्व की कृषि तथा पशुपालन अर्थ व्यवस्था को प्रभावित कर रहा है। वातावरणीय तापमान में परिवर्तन पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन, पोषण इत्यादि को प्रभावित करता है, जिससे पशु की उत्पादन क्षमता पर विपरित प्रभाव पड़ रहा है। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ते हुए तापमान, अनियंत्रित मानसून, भयंकर सर्दी, ओले, तेज हवा आदि पशुओं के स्वास्थ्य, शारीरिक वृद्वि तथा उत्पादकता को प्रभावित करते हैं। जलवायु परिवर्तन पशु व मानव की प्रतिरक्षा प्रणाली की कार्यक्षमता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन के दुस्प्रभावों को कम करने के लिए कृषि तथा पशुपालन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, अन्यथा भारत जैसे विकासशील देश में बढ़ती हुई जनसंख्या के सामने खाद्यान्न का भंयकर संकट उत्पन्न हो सकता है, इससे निपटने के लिए फसलों के अवशेष जलाने, जैव ईंधन का प्रयोग कम करने, गैर रासायनिक खेती, वैज्ञानिक पशुपालन जैसी विभिन्न गतिविधियों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम से कम हो। किसान व पशुपालक वर्षा जल के उचित प्रबंधन, जैविक व समेकित खेती, मौसम पूर्वानुमान, फसल उत्पादन में नवीन तकनीकों तथा पर्यावरण स्मार्ट कृषि को अपनाकर जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान को कम करने में अपना योगदान दे सकते हैं। विश्वविद्यालय भी इस क्षेत्र में समय–समय पर पशुपालकों को वैज्ञानिक व उन्नत पशुपालन व गोबर–गौमूत्र प्रसंस्करण पर प्रशिक्षण प्रदान कर जलवायु परिवर्तन से होने वाले नुकसान को कम करने में अपना योगदान दे रहा है।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

एकेडिमिया–इंडस्ट्री इंटरेक्शन कार्यक्रम

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.), जयपुर में 7 फरवरी को राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना (नाहेप) के अन्तर्गत संस्थान के पशुधन नवाचार ज्ञान एवं उद्यमिता कौशल केन्द्र (लाईक्स) द्वारा एकेडिमिया–इंडस्ट्री इंटरेक्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सतीश के. गर्ग, माननीय कुलपति, राजुवास, बीकानेर ने अपने उद्‌बोधन में विद्यार्थियों में सफल उद्यमिता के गुण विकसित करने पर जोर दिया। विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि शुरूआत से ही आपको पता होना चाहिये कि आप क्या बनना चाहते हैं। जीवन में सफलता के लिये जरूरी है कि आप चुनौतियों का डटकर मुकाबला करें। उन्होंने विश्वास जताया कि यह कार्यक्रम विद्यार्थियों में उद्यमिता कौशल विकसित करने में मददगार साबित होगा। विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.एस. राठौड़, प्रधान वैज्ञानिक एवं राष्ट्रीय समन्वयक, नाहेप, आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली ने अपने उद्‌बोधन में नाहेप परियोजना के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि विद्यार्थियों में सॉफ्ट स्किल्स, उद्यमिता, रोजगार आदि विकसित करना ही इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है। इससे पहले कार्यक्रम में प्रो. आर.के. धूड़िया, मुख्य अन्वेषक, नाहेप आई.जी. परियोजना तथा निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर ने संस्थान के लाईक्स केन्द्र द्वारा आयोजित किये गये विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी साझा की। कार्यक्रम में इंडस्ट्री की तरफ से ए.बी.ई.एस. हेल्थ एवं न्यूट्रीशन इण्डिया प्रा. लि., करनाल के श्री प्रेम कंसल, लोट्स डेयरी, बीकानेर के बोर्ड निदेशक श्री अनुज मोदी, एक्यूवांस एल.एल.पी., नई दिल्ली के सह–संस्थापक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. अरविन्द गौतम, आई.सी.ए.आर.–सी.एस.डब्ल्यू.आर.आई, अविकानगर के कृषि व्यवसाय इन्क्यूबेशन केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. विनोद कदम तथा प्रगतिशील किसान श्री सुरेन्द्र अवाना ने अपने–अपने क्षेत्र से संबंधित व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों को स्वरोजगार के लिये प्रेरित किया। संस्थान की अधिष्ठाता प्रो. शीला चौधरी ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्यों तथा स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों ने भागीदारी निभाई। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के लाईक्स केन्द्र के सह–मुख्य अन्वेषक डॉ. अशोक बैंधा तथा डॉ. रश्मि सिंह की देखरेख में आयोजित किया गया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में कृषि बजट को किसानों एवं पशुपालकों ने देखा लाइव

माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा राजस्थान विधानसभा सदन में प्रस्तुत बजट भाषण को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति सभागार में बड़ी स्क्रीन पर किसानों एवं पशुपालकों ने कृषि बजट का लाइव प्रसारण देखा। इस अवसर पर डॉ. कैलाश चौधरी संयुक्त निदेशक कृषि, भैराराम गोदारा सहायक निदेशक कृषि विभाग एवं प्रो. आर.के. धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा उपस्थित रहे। माननीय मुख्यमंत्री द्वारा किसानों एवं पशुपालकों के लिए की गई घोषणाओं का किसानों एवं पशुपालकों ने आभार व्यक्त किया। इससे पूर्व विश्वविद्यालय के डीन–डॉयरेक्टर एवं शिक्षकों ने भी बजट का लाइव प्रसारण देखा।

राजुवास क्लिनिक्स में बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान सुविधा शुरू

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के क्लिनिक्स में बकरियों में भी कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा शुरू हो गई है। निदेशक क्लिनिक्स, प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि पशुपालकों हेतु सिरोही, जमनापारी, बारबरी एवं जखराना नस्ल की देशी बकरियों के लिए एवं सेनन व बोयर विदेशी नस्ल की बकरियों के लिए हिमकृत वीर्य द्वारा अब बीकानेर वेटरनरी कॉलेज के पशु चिकित्सा संकुल में यह सुविधा उपलब्ध रहेगी। प्रभारी मादा प्रसुति एवं मादा रोग विभाग, डॉ. प्रमोद कुमार ने बताया कि इस विभाग के कुशल पशु चिकित्सकों द्वारा बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान किया जायेगा।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में स्वच्छता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए ग्राम गाढवाला के ग्राम पंचायत भवन में दिनांक 28 फरवरी को स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें डेरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों के द्वारा सक्रिय भागीदारी निभाई गई। इस कार्यक्रम का आयोजन यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के समन्वयक डॉक्टर नीरज कुमार शर्मा के मार्गदर्शन में हुआ। स्वच्छता कार्यक्रम के आयोजन में डॉ. निर्मल सिंह एवं डॉ. अभिषेक का सहयोग रहा।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का उचित प्रबंधन जरूरी

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुपालन विभाग, बीकानेर संभाग के हनुमानगढ़ व गंगानगर जिले के विभिन्न पशु चिकित्सालयों व पशु उपकेन्द्रों पर कार्यरत पशुधन सहायकों का पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 22 फरवरी को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने कहा कि पशुधन सहायकों को जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का निस्तारण पूरी जिम्मेदारी एवं सावधानी के साथ करना चाहिए ताकि कार्यस्थल के साथ–साथ वातावरण भी स्वस्थ रखा जा सके। समापन अवसर पर डॉ. हुकमा राम अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर व उप–निदेशक, पशुपालन विभाग, बीकानेर डॉ. गीता बेनीवाल ने सम्बोधित किया। डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. मनोहर सेन, डॉ. महेंद्र तंवर व डॉ. देवेन्द्र चौधरी ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन एवं निस्तारण विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रशिक्षण में 30 पशुधन सहायकों ने भाग लिया।

आत्मा योजनांतगर्त नोखा के पशुपालकों का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत गोपालन एवं गोबर–गोमूत्र प्रसंस्करण" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 25 फरवरी को समाप्त हुआ। प्रशिक्षण में नोखा तहसील के भामटसर के 30 पशुपालक शामिल हुए। समापन अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि उन्नत गोपालन एवं गौबर गोमूत्र प्रशिक्षण ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार का आधार बन सकता है पशुपालक भाई कृषि के साथ–साथ गौपालन के माध्यम से अतिरिक्त आय अर्जित कर अपनी आजीविका को उन्नत बना सकते है।

आपदा मित्रों का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र में भारत सरकार गृह मंत्रालय द्वारा प्रायोजित आपदा मित्र योजनान्तर्गत बीकानेर जिले के स्वयंसेवकों को नोडल प्रशिक्षण संस्थान, पशु आपदा प्रबंघन तकनीक केन्द्र में 10 से 21 फरवरी, 2023 तक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिला नोडल अधिकारी प्रो. प्रवीण बिश्नोई ने बताया की इस आवासीय प्रशिक्षण शिविर में राज्य आपदा प्रतिसाद बल के कमाण्डेट राजकुमार गुप्ता के निर्देशन में आपदा मोचन बल (एस.डी.आर.एफ.) के प्रशिक्षकों की टीम द्वारा 71 स्वयंसेवकों को 12 दिवस में प्राकृतिक एवं मानव जनित आपदा जिसमें ध्वस्त ढांचा संरचना खोज एवं बचाव, बाढ एवं जल जनित हादसों, एल.पी.जी. गैस सम्बधित दुर्घटनाओं एवं घायल व्यक्ति को प्राथमिक उपचार, सी.पी.आर. देना, रस्से के द्वारा बहुमंजिली इमारतों से घायलों को बचाने का प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण में सेवानिवृत सेन्य अधिकारी, सिविल अभियंता, होमगार्ड, नागरिक सुरक्षा, एन.सी.सी., एन.एस.एस., भारत स्काउट्स, फायरमैन, एवं नेहरू युवा केन्द्र के स्वयंसेवको को शामिल किया गया। समापन समारोह में एस.डी.आर.एफ. के कम्पनी कमाण्डर किशनाराम, प्रेमचन्द, राजाराम, श्रवण एवं महेश उपस्थित रहे।

आत्मा योजनान्तगर्त गाढ़वाला (बीकानेर) के पशुपालकों का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत गोपालन एवं गोबर–गोमूत्र प्रसंस्करण" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 9–10 फरवरी को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में गाड़वाला के 30 पशुपालक शामिल हुए। समापन अवसर पर कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. कैलाश चौधरी ने कहा कि आज के समय में कृषि एवं पशुपालन को व्यवसाय एवं उद्यम के रूप में अपनाने की आवश्यकता हैं। यदि कृषि एवं पशुपालन को समन्वित रूप से किया जाए तो निश्चित ही पशुपालक इससे लाभान्वित होंगे। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने इस अवसर कहा उन्नत गोपालन एवं गौबर गोमूत्र प्रशिक्षण ग्रामिण महिलाएं, युवा के लिए स्वरोजगार का आधार बन सकता है पशुपालक भाई कृषि के साथ–साथ गौपालन के माध्यम से अतिरिक्त आय अर्जित कर अपनी आजीविका को उन्नत बना सकते है। डॉ. नीरज कुमार शर्मा के द्वारा पशुपालकों को डेयरी, पोल्ट्री व पशुचिकित्सा संकुल का भ्रमण करवाया गया। प्रशिक्षण समापन के दौरान भैराराम गोदारा सहायक निदेशक कृषि विभाग मौजुद रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 1–2 एवं 3–4 फरवरी को गांव तारानगर एवं सुजानगढ में आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 3 एवं 7 फरवरी को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर, 8 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय तथा 9–10, 13–17 एवं 23–24 फरवरी आत्मा योजनान्तर्गत दो तथा पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 256 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 8, 14, 20, 23, 25 एवं 27 फरवरी को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 112 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 4 एवं 10 फरवरी को गांव डूंगरीकला एवं भगवानपुरा गांवो में तथा 7, 14 एवं 21 फरवरी को आयोजित आनॅलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 106 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8, 9, 21, 22 एवं 23 फरवरी को गांव पादरेदी, गुहरा, मनात एवं देवल खास गांवो में तथा दिनांक 6 एवं 7 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालन प्रशिक्षण शिविरों में 210 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 8, 15 एवं 21 फरवरी को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 95 पशुपालकों व कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 24–25 फरवरी को आत्मा योजनान्तर्गत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 30 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 8, 10, 13, 15 एवं 17 फरवरी .को एक दिवसीय ऑनलाइन तथा 20 एवं 25 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 6–7 फरवरी को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 199 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 13, 14, 15, 16, 17, 20, 22, 23, 24, 25, 27 एवं 28 फरवरी को गांव बालसंमद, कुसुम्बी, रोडू, रिंगण, जसवंतगढ़, मिठडी, ध्यावा, आसपुरा, समना, घरदोदा मीठा, लाछड़ी एवं उदरासर गांवों में तथा 4 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 299 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 13, 15 एवं 20 फरवरी को ऑनलाइन तथा 10 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 6–7, 16–17 एवं 27–28 फरवरी को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 219 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 3, 10, 13, 15, 21, 23 एवं 27 फरवरी को गांव आरामपुरा, पीपल्दा शेखान, नगपुरा, रंगपुर, मारवाड़ा चोकी, मानसगांव एवं नोटाणा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 7–8 फरवरी आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 229 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 14, 16,, 20, 22, 23 एवं 27 फरवरी को गांव मुरलीपुरा, भोजपुरा, रामजीपुरा, बोबास, जयसिंहपुरा एवं ढेरा गांवो में एक दिवसीय तथा 6–7 फरवरी आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 8, 13, 6 एवं 28 फरवरी को गांव खानपुर, मोर्डन, रामसीन एवं बीबलसर गांवो में तथा दिनांक 23 एवं 24 फरवरी को आनॅलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 126 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 3, 4, 14, 20, 25 एवं 27 फरवरी को गांव ओदी का पुरा, टेहरी का पुरा, नगरिया, इन्दोली, टांडा एवं कोलारी गांवों में तथा 7 एवं 16 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 236 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 2, 4, 6, 10 एवं 13 फरवरी को गांव 25 एनटीआर, परलिका, रामगढ़, बरमसर एवं भूकारका में एक दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 93 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मार्च, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	जैसलमेर	अजमेर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, डूंगरपुर, बीकानेर, दौसा, जोधपुर, पाली, उदयपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जोधपुर, सीकर, उदयपुर	–	–	–
फेशिओलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	–	बांसवाड़ा	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर	भरतपुर, उदयपुर	अलवर, सीकर	भीलवाड़ा, बूंदी, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, जैसलमेर, झालावाड़, झुंझुनू, करौली, कोटा, सवाईमाधोपुर, सिरोही, टोंक, उदयपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर, जयपुर	हनुमानगढ़	दौसा	बारां, बाड़मेर, भरतपुर, बूंदी, झुंझुनू, धौलपुर, श्रीगंगानगर, झालावाड़
पी.पी.आर.	बकरी	जयपुर, जोधपुर	बारां, जैसलमेर	टोंक	अजमेर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, चूरू, दौसा, डूंगरपुर, जालौर, झालावाड़, झुंझुनू, करौली, नागौर, पाली, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सीकर, सिरोही, उदयपुर
स्वाइनफीवर	सूअर	झालावाड़	–	–	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं
डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

वैज्ञानिक तरीके से बकरी पालन कर अन्य पशुपालकों के प्रेरणा स्त्रोत बने इस्लाम खान

श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ तहसील के गांव लाड़ाना के पास चक 4 एम.सी के इस्लाम खान पुत्र भंवर खान ने एम.ए. तक पड़ाई करने के बाद एक व्यवस्थित बकरी पालन व्यवसाय शुरू करने का मानस बनाया परन्तु बकरी पालन की अधिक जानकारी न होने के कारण इन्हें प्रारम्भ में अधिक मुनाफा नहीं हुआ तब इसलाम खान ने पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ से सम्पर्क किया तथा इस केन्द्र के अधिकारियों से बकरी पालन की वैज्ञानिक विधि से बकरी पालन प्रबंधन की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करके अपना बकरी फार्म 40 बकरियों से शुरू किया। वर्तमान में इनके पास कुल 150 बकरियां है जिसमें से 75 बकरियां सोजत नस्ल की तथा बाकी सभी बीटल नस्ल की बकरियां है। इसलाम खान के पास 52 बीघा जमीन है जिसमें से बकरी फार्म 2.5 बीघा क्षेत्र में बनाया गया तथा बाकी जमीन पर खेतीबाड़ी भी कर रहे है। यह बकरियों को चारा बाड़े में तथा खुला चराकर दोनो विधि से अपनाते है तथा स्वंय सन्तुलित आहार तैयार कर बकरियों को खिलाते हैं और समय–समय पर कर्मिनाशक दवा सम्पूर्ण टीकाकरण करवाते है। इसलाम समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ से सम्पर्क कर बकरियों में होने वाले विभिन्न रोगों की रोकथाम के बारे में जानकारी लेते रहते हैं। यह बकरी पालन से अच्छी कमाई कर सालाना लगभग 8–10 लाख रू. की आय अर्जित कर लेते हैं। इन्हें बकरी फार्म शुरू किये हुए लगभग 2 वर्ष हो गये है । वर्तमान में इसलाम अन्य पशुपालकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन कर क्षेत्र के अन्य पशुपालकों को भी पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा समय–समय पर आयोजित पशुपालन से सम्बन्धित प्रशिक्षणों के बारे में अवगत कराते रहते है। इन्होनें अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवारजन तथा पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों व अधिकारियों को देते है।

सम्पर्क- इस्लाम खान, गांव चक-4 एम.सी., तहसील-सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) (मो. नं. 7689011000)

अचानक बढ़ती गर्मी से पशुओं को बचाएं

जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में कई प्रकार के बदलाव होते रहते है। मौसम में आये अचानक परिवर्तन के चलते पशुओं की देखभाल व दिनचर्या में भी बदलाव आवश्यक होता है। अचानक पड़ने वाली अत्याधिक धूप या गर्मी की वजह से पशुओं का तापमान बढ़ने लगता है तथा पशुओं के शरीर का प्राकृतिक कूलिंग सिस्टम सुचारू रूप से काम करना बंद कर देता है जिसकी वजह से पशुओं के शरीर का तापमान कम नहीं हो पाता तथा बढ़ता रहता है जिसे हीट स्ट्रोक कहते हैं तथा अत्यधिक बढ़ने पर पशुओं की मृत्यु भी हो सकती है। सभी पशुओं का एक निश्चित दैहिक तापमान सीमा होती है जिसे बरकरार रखना पशुपालक की प्राथमिकता होती है इससे अधिक तापमान पशुओं के लिए तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर सकता है। अत्यधिक तापमान से पशुओं की कार्यक्षमता कम हो जाती है और पशु को कई प्रकार की बीमारियां होने का खतरा भी बढ़ जाता है।

- अधिक तापक्रम के चलते पशुओं की श्वसन दर 10–30 से बढ़कर 30–60 बार प्रति मिनट तक पहुंच जाती है।
- पशु हांफने लगते है और उनके मुंह से लार गिरती दिखाई देती है।
- पशुओं के शरीर में बाइकार्बोनेट तथा आयनों की कमी से रक्त की पी.एच कम हो जाती है तथा रक्त में अम्लीयता बढ़ जाती है जो कि खतरनाक हो सकती है।
- अधिक तापक्रम के दौरान पशुओं के शरीर का तापमान 102.5 डिग्री से 103 डिग्री फारनेहाइट तक बढ़ जाता है।
- अधिक तापक्रम पशुओं के स्तन ग्रन्थियों के विकास को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इसका प्रभाव पशु की आगामी दुग्धावस्था में दिखाई देता है।
- अधिक तापमान के दौरान पशुओं में मदकाल की अवधि छोटी हो जाती है तथा प्रजनन हार्मोन के स्त्राव में असंतुलन मुख्यतः इस्ट्रोजन हार्मोन (जो मद के व्यवहार को प्रभावित करता है) की मात्रा कम हो जाती है। शरीर का तापमान अधिक होने के कारण कई बार पशु गर्भधारण नहीं कर पाता है।
- उष्मीय तनाव बढ़ने से निषेचन क्रिया पर भी विपरित प्रभाव पड़ता है जो भ्रूण को क्षति भी पहुंचा सकता है तथा पैदा हुए बछड़े का दैहिक भार सामान्य ताप पर जन्म लेने वाले बछड़ो से कम हो जाता है।

उष्मीय तनाव से पशुओं का बचाव कैसे करें:

गर्मियों के मौसम में पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य एवं उत्पादन स्तर को स्थिर रखने के लिए उनकी विशेष देखभाल की आवश्यकता पड़ती है। पशुओं के परिवेश के तापमान को कम करके उष्मीय तनाव को कम किया जा सकता है।

- पशुओं को छाया में बैठाना चाहिए। पशुओं के लिए छायादार बाड़े का निर्माण करना चाहिए इससे 30–50 प्रतिशत तक गर्मी के प्रभाव को कम किया जा सकता है।
- बाड़े के शेड की बनावट पूर्व–पश्चिम वाली स्थिति में हो ताकि मई–जून के महीने में कम से कम धूप ही अंदर आए तथा दिसम्बर के महीने में पशु को अधिक धूप मिल पाए।
- पशुओं को गर्मी से राहत देने के लिए अन्य तरीके जैसे– फव्वारें, कूलर, मिस्ट पखें, पानी के टैंक तथा नहलाने आदि की व्यवस्था करनी चाहिए।
- पशुशाला में लू से बचाव के लिए उपलब्ध सामान जैसे जूट या बोरी के पर्दो का उपयोग करना चाहिए।
- बाहरी वातावरण के साथ ही पशुओं के शरीर के आंतरिक वातावरण को भी संतुलित आवश्यक होता है जिससे उनके शरीर में आयन तथा अम्ल व क्षार का सन्तुलन बना रहें।
- पशुओं को रेशायुक्त आहार देना चाहिए ताकि अधिक मात्रा में लार स्त्रावित होती रहें।
- पशुओं को खनिज तत्व जैसे सोडियम 5 प्रतिशत तथा पोटेशियम 1.25 से 1.5 प्रतिशत आहार के साथ खिलाना चाहिए।
- गर्मियों में हरे चारे की पैदावार कम हो जाती है जिसकी कमी को पूरा करने के लिए सूखा भूसा भिगोकर तथा उसमें दाना व मिनरल मिश्रण मिलाकर देना चाहिए।
- गर्मियों में पशुओं की ऊर्जा आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए अधिक ऊर्जायुक्त आहार खिलाना चाहिए ऐसा आहार खिलाने से शारीरिक तापमान में कोई वृद्वि नहीं होती है और श्वसन दर भी सामान्य बनी रहती है।
- गर्मियों में पशुओं के लिए हर समय ताजा व स्वच्छ पानी की व्यवस्था करनी चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं में लहू मूतना या बबेसिओसिस रोग

बबेसिओसिस पशुओं में होने वाला रोग है जो एक कोशिकीय रक्त प्रोटोजोआ के संक्रमण के कारण होता है। यह एक घातक बीमारी है जिसका प्रसार चींचड़ों के द्वारा होता है। बबेसिया परजीवी की चार प्रमुख प्रजातियां बबेसिया मेजर, बबेसिया बोविस, बबेसिया बाइजेमिना व बबेसिया डाईवरजेन्स है। यह चारों प्रजातियां गाय तथा भैंस को प्रभावित करती है। इन सभी में से बबेसिया बाइजेमिना प्रमुख प्रजाति है जो पशुओं में बीमारी का मुख्य कारण है। बबेसिया प्रजाति के प्रोटोजोआ पशुओं के रक्त में चिचड़ियों के माध्यम से प्रवेश कर जाते हैं तथा वे रक्त की लाल रक्त कोशिकाओं में जाकर अपनी संख्या में बढ़ने लगते हैं जिसके फलस्वरूप लाल रक्त कोशिकाएं नष्ट होने लगती हैं। लाल रक्त कोशिकाओं में मौजूद हीमोग्लोबिन पेशाब के द्वारा शरीर से बाहर निकलने लगता है जिससे पेशाब का रंग कॉफी के रंग का हो जाता है। कभी–कभी पशु को खून वाले दस्त भी लग जाते हैं। विदेशी और संकर नस्ल के पशु इसके प्रति अति संवेदनशील होते हैं। बबेसिया परजीवी नाशपति के आकार तथा 2.5–5.0 माइक्रो मीटर का होता है। इस रोग की अवधि अधिकतर पशुओं में 1–2 सप्ताह होती है। यह रोग पशुओं में दूध उत्पादन की कमी, शारीरिक विकास में कमी, बीमार पशुओं के इलाज की लागत, मृत्यु दर तथा काम करने वाले पशुओं की कार्य क्षमता की कमी करके किसानों को भारी आर्थिक नुकसान पहुंचता है।

संक्रमण :

बबेसिया प्रजाति के प्रोटोजोआ पशुओं के रक्त में चिचड़ियों (चिंचड़) के माध्यम से प्रवेश कर जाते हैं तथा वे रक्त की लाल रक्त कोशिकाओं में जाकर अपनी संख्या में बढ़ने लगते हैं जिसके फलस्वरूप लाल रक्त कोशिकाएं नष्ट होने लगती है। लाल रक्त कोशिकाओं में मौजूद हीमोग्लोबिन पेशाब के द्वारा शरीर से बाहर निकलने लगता है जिससे पेशाब का रंग लाल या कॉफी कलर के रंग का हो जाता है तथा कभी–कभी पशु को खून के दस्त भी लग जाते हैं जिससे पशु के खून में कमी हो जाने से पशु बहुत कमजोर हो जाता है। पशु में पीलिया के लक्षण भी दिखाई देने लगते हैं तथा समय पर इलाज नहीं कराया जाये तो पशु की मृत्यु भी हो सकती है।

प्रमुख लक्षण :

- तेज बुखार व दुग्ध उत्पादन में अचानक गिरावट।
- खून की कमी और पशु का हांफना।
- दुर्बलता तथा भूख की कमी।
- मूत्र का लाल या कॉफी कलर जैसा रंग होना।
- पहले दस्त लगना तथा उसके बाद कब्ज होना।

उपचार :

लहू मूतना रोग के उपचार के लिए डाइमिनेजीन एसीटुरेट, अमिडोकार्ब, लम्बे समय तक काम करने वाली ओक्सीटेट्रसाइक्लिन प्रतिजीवी एवं खून बढ़ाने वाली दवाओं का प्रयोग किया जाता है। सामान्यतः डाइमिनेजीन का एक एंजेक्शन ही काफी होता है लेकिन जरूरत पड़ने पर आवश्यकता अनुसार अपने पशु चिकित्सक की सलाह पर इसे पुनः लगा सकते हैं, लेकिन जरूरी है कि वह दवाइयां केवल पशुचिकित्सक के द्वारा ही दी जानी चाहिए। पशु हांफता है और दुर्बल हो जाता है ऐसे पशु को ज्यादा

चलाना या काम नहीं करवाना चाहिए और अधिकतम समय उसे बैठा ही रहने देना चाहिए। इसमें बिरेनिल के टीके पशु के भार के अनुसार मांस में दिए जाते है तथा खून बढ़ाने वाली दवाओं का प्रयोग किया जाता है। यदि समय पर पशु का इलाज कराया जाये तो पशु को इस बीमारी से बचाया जा सकता है। इस बीमारी से पशुओं को बचाने के लिए उन्हें चिचड़ियों के प्रकोप से बचना जरूरी है क्योंकि ये रोग चिचड़ियों के द्वारा ही पशुओं में फैलता है। रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।

डॉ. विनय कुमार, डॉ. प्रमोद कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	: बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: लागू नहीं

मैं प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01–3–2023

(प्रो. {डॉ.} राजेश कुमार धूड़िया)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

निदेशक की कलम से...

जैविक खेती और जैविक पशुपालन एक दूसरे के पूरक

वर्षभर अतिरिक्त और स्थिर आय देने वाला पशुपालन व्यवसाय किसानों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कारक है। जैविक पशुपालन, पशु उत्पादन का तरीका है जिसमें पशु पोषण, पशु आवास और पशु प्रबन्धन में पारिस्थितिकी तंत्र के जैविक घटकों के उपयोग पर बल दिया जाता है। संतुलित और टिकाऊ जैविक पशुपालन हेतु एक से अधिक पशु प्रजातियों का फसलों के साथ एकीकरण किया जाना चाहिए। जैविक खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग को देखते हुए प्रदेश के बहुत सारे पशुपालक जैविक खेती के साथ जैविक पशुपालन अपना रहे हैं व आर्थिक लाभ के साक्षी बन रहे हैं। कृषि योग्य प्रणाली में जुगाली करने वाले पशुओं की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि पशुधन जैविक खाद का स्त्रोत है जो भूमि की उर्वरता को बढ़ाती है, पशुओं के गोबर में लाखों संख्या में जीवणु पाये जाते हैं जो भूमि में मिलने पर उसमें उपस्थित जटिल पोषक तत्वों को सरल पोषक तत्वों में बदल देते हैं, जिससे ये पोषक तत्व पौधों को आसानी से उपलब्ध हो जाते है। गोबर की खाद, मुर्गी की बीट आदि का उपयोग करने से मिट्टी में उपस्थित लाभकारी जीवाणु एन्जारम गतिविधियां व उर्वरता पर अनुकूल व दीर्घकालीन प्रभाव पड़ता है। जैविक पशुपालन एक प्रकार का खाद्यतंत्र है जिसमें पशुओं के कल्याण, पर्यावरण सुरक्षा, न्यूनतम मात्रा में औषधियों का प्रयोग तथा बिना पेस्टीसाइड उत्पादन होता है। पशुपालकों व किसानों में जागरूकता के लिए विश्वविद्यालय में जैविक पशुपालन पर एक केन्द्र की स्थापना की गई है जो किसानों व पशुपालकों को जैविक पशुपालन पर प्रशिक्षण प्रदान करता है। अतः किसानों व पशु पालकों को विश्वविद्यालय के साथ मिलकर जैविक कृषि व पशुपालन की ओर कदम बढ़ाने चाहिए।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया